B.A Part-1 (H) Philosophy

Dr० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / /	Page

बौद्ध-दर्शन के क्षणभंगवाद की व्याख्या करें।

Ans:→ बौद्ध-दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद का प्रतिफल ही क्षणिकवाद के रूप में देखने को मिलता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के द्वारा सांसारिक वस्तुओं की अनित्यता सिद्ध होती है। बुद्ध ने कहा भी है कि सभी वस्तुएँ नाशवान एवं परिवर्तनशील हैं। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति किसी-न-किसी कारण से होती है। अतएव, कारण के नष्ट होने पर उस वस्तु विशेष का भी नाश हो जाता है, जिसका आदि है, उसका अंत भी है। सभी वस्तुओं की उत्पत्ति कारणानुसार ही होती है। सभी वस्तुएं अनित्य हैं। नित्य एवं स्थायी प्रतीत होने वाला पदार्थ भी वस्तुतः विनाशी है। बुद्ध ने विश्व की विभिन्न वस्तुओं के संबंध में अनित्यवाद को स्वीकार किया है। परवर्ती बौद्धों ने अनित्यवाद को ही क्षणिकवाद का रूप दिया है। अनित्यवाद के अनुसार विश्व की सभी वस्तुएं अनित्य हैं। अनित्यवाद शाश्वतवाद एवं उच्छेदवाद का मध्य मार्ग अपनाने की सलाह दी है जिसके अनुसार यह स्वीकार किया गया है कि जीवन परिवर्तनशील है, यहाँ सत् एवं असत् का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। क्षणिकवाद अनित्यवाद का ही परिवर्द्धित एवं विकसित रूप है। क्षणिकवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षण भर के लिए है। अतः प्रत्येक वस्तु अनित्य ही नहीं बल्कि क्षणभंगुर भी है। विश्व के पदार्थों का अस्तित्व केवल क्षण भर के लिए होता है। क्षणिकवाद के समर्थन में अर्थ-क्रिया कारित्व पर आधारित तर्क प्रस्तुत किया जाता है। कहा गया है कि 'अर्थ-क्रिया-कारित्वलक्षणां सत्'। किसी भी वस्तु की सत्ता को तभी तक स्वीकार किया जा सकता है जब तक उसमें कार्य करने की शक्ति मौजूद हो। आकाश कुसुम की भांति जो असत् है उससे किसी कार्य का विकास नहीं हो सकता है। इससे प्रमाणित होता है कि यदि कोई वस्तु कार्य उत्पन्न कर सकती तब तो उसकी सत्ता है अन्यथा नहीं। एक समय में एक वस्तु से एक ही कार्य संभव है। आधुनिक दार्शनिक बर्गसां ने भी क्षणिकवाद सिद्धांत का समर्थन किया है। इनके अनुसार भी विश्व की सभी वस्तुएँ प्रत्येक क्षण परिवर्तनशील हैं। यह कारण-कार्य सिद्धांत की विवेचना करने में असफल है। यह सिद्धांत कर्मवाद का भी खंडन करता है। यह सिद्धांत निर्वाण की अवधारणा का भी खण्डन करता है। यह सिद्धांत स्मृति एवं प्रतिभिज्ञा की व्याख्या करने में भी असमर्थ है।